एम. ए. हिंदी कार्यक्रम

द्वितीय वर्ष के सत्रीय कार्य
(जुलाई 2018 और जनवरी 2019 सत्रों के लिए)

वैकल्पिक पाठ्यक्रम

मॉड्यूल '2' – उपन्यास : विशेष अध्ययन

एम.एच.डी–13 : उपन्यास : स्वरूप और विकास
एम.एच.डी–14 : हिंदी उपन्यास–1 (प्रेमचंद का विशष अध्ययन)
एम.एच.डी–15 : हिंदी उपन्यास–2
एम.एच.डी–16 : भारतीय उपन्यास

(पृष्ठ 1 से 7 तक)

मॉड्यूल '2' – उपन्यास : विशेष अध्ययन

एम.एच.डी.-13 – उपन्यास : स्वरूप और विकास

(पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.-13/टीएमए/2018-2019
कुल अंक : 100

नोट : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. आधुनिक युग में 'उपन्यास' विधा के उदय के प्रमुख कारणों पर प्रकाश डालिए। 15

2. उपन्यास के वर्गीकरण के विविध आधारों पर विस्तार से चर्चा कीजिए। 15

3. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के ग्रामीण जीवन के यथार्थ पर लिखे गए उपन्यासों का परिचय देते हुए उनकी विशेषताएँ बताइए। 15

4. आंचलिकता का मूल आशय स्पष्ट करते हुए हिंदी के आंचलिक उपन्यास के क्षेत्र मं फणीश्वरनाथ रेणु के योगदान को स्पष्ट कीजिए। 15

5. उपन्यास की आलोचना संबंधी विविध दृष्टियों पर प्रकाश डालिए। 15

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : 5 X 5 = 25

   (क) औपन्यासिक संरचना

   (ख) उपन्यास और प्रकृतवाद

   (ग) हिंदी उपन्यास में 'स्त्री चेतना'

   (घ) उपन्यास और यथार्थ का संबंध

   (ङ) हरिभाऊ आप्टे

एम.एच.डी.–14 : हिन्दी उपन्यास-1
(प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी. - 14
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.-14/टीएमए/2018-2019
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10×4 = 40

(क) बैजनाथ को चिंता हो रही थी कि मदनसिंह का पक्ष ग्रहण करने में पद्मसिंह बुरा तो न मान जाएंगे। और पद्मसिंह अपने बड़े भाई की अप्रसन्नता के भय से दबे हुए थे। सिर उठाने का साहस नहीं होता था। एक ओर भाई की अप्रसन्नता थी, दूसरी ओर सिद्धान्त और न्याय का बलिदान। एक ओर अंधेरी घाटी थी, दूसरी ओर सीधी चट्टान, निकलने का कोई मार्ग न था। अन्त में उन्होंने डरते-डरते कहा-भाई साहब, आपने मेरी भूलें कितनी बार क्षमा की हैं। मेरी एक ढिठाई और क्षमा कीजिए। आप जब नाच के रिवाज को दूषित समझते हैं, तो उस पर इतना जोर क्यों देते हैं ?

(ख) आप इस त्रिमूर्ति को देखकर चौंकते होंगे। पर मेरे लिए यह मिट्टी के खिलौने हैं। विषयासक्त आँखें इनके रूप-लावण्य पर मिट्टी हैं, मैं उस ज्योति को देखता हूँ जो इनके घट में व्याप्त है। बाह्य रूप कितना ही सुन्दर क्यों न हो, मुझे विचलित नहीं कर सकता। वह भकुए हैं, जा गुफाओं और कन्दराओं में बैठकर तप और ध्यान के स्वाँग भरते हैं। वह कायर हैं, प्रलोभनों में मुँह छिपाने वाले, तष्णाओं से जान बचाने वाले हैं। वे क्या जानें कि आत्म-स्वातन्त्र्य क्या वस्तु ह! चित्त की दृढ़ता और मनोबल का उन्हें अनुभव ही नहीं हुआ।

(ग) सूरदास कहाँ तो नैराश्य ग्लानि चिंता और क्षोभ के अपार जल में गोते खा रहा था कहाँ यह चेतावनी सुनते ही उसे ऐसा मालूम हुआ, किसी ने उसका हाथ पकड़कर किनारे पर खड़ा कर दिया। वाह! मैं तो खेल में रोता हूँ। कितनो बुरी बात है। लड़के भी खेल में रोना बुरा समझते हैं, रोनेवाले को चिढ़ाते हैं और मैं खेल में रोता हूँ। सच्चे खिलाड़ी कभी रोते नहीं, बाजी-पर-बाजी हारते हैं, चोट-पर-चोट खाते हैं, धक्क-पर-धक्के सहत हैं; पर मैदान में डटे रहते हैं, उनकी त्यौरियों पर बल नहीं पड़ते। हिम्मत उनका साथ नहीं छोड़ती, दिल पर मालिन्य के छींटे भी नहीं आते, न किसी से जलते हैं, न चिढ़ते हैं। खेल में रोना कैसा ? खेल हँसने के लिए, दिल बहलाने के लिए है, रोने के लिए नहीं।

(घ) मगर कोई आदमी अपने बुरे आचरण पर लज्जित होकर भी सत्य का उद्घाटन करे, छल और कपट का आवरण हटा दे, तो वह सज्जन है, उसके साहस की जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। मगर शर्त यही है कि वह अपनी गोष्ठी के साथ किए का फल भोगने का तैयार रहे। हंसता–खेलता फाँसी पर चढ़ जाए तो वह सच्चा वीर है, लेकिन अपने प्राणों की रक्षा के लिए स्वार्थ के नीच विचार से, दंड की कठोरता से भयभीत होकर अपने साथियों से दगा करे, आस्तीन का साँप बन जाए तो वह कायर है, पतित है बेहया है। विश्वासघात डाकुओं और समाज के शत्रुओं में भी उतना ही हेय है जितना किसी अन्य क्षेत्र में। ऐसे प्राणी को समाज कभी क्षमा नहीं करता, कभी नहीं-जालपा इसे खूब समझती थी।

2. प्रेमचंद की कहानी कला क विकास के विविध चरणों का विश्लेषण कीजिए। 10

3. प्रेमाश्रम के प्रमुख नारी चरित्रों की विशेषता बताइए। 10

4. 'रंगभूमि' के औपन्यासिक शिल्प पर प्रकाश डालिए। 10

5. गबन में प्रेमचंद ने तत्कालीन मध्यवर्ग को जीवन की व्यापकता में चित्रित किया है— इस कथन के आलोक में 'गबन' उपन्यास का विश्लेषण कीजिए। 10

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : $5 \times 4 = 20$

(क) प्रेमशंकर का चरित्र
(ख) 'सेवासदन' को मूल समस्या
(ग) 'गबन' में मध्यवर्ग
(घ) प्रेमचंद की जीवन दृष्टि

एम.एच.डी.–15 : हिन्दी उपन्यास-2
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी. - 15
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.-15/टीएमए/2018-2019
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : $10 \times 4 = 40$

(क) सब शासन व्यवस्थाओं की नींव सामयिक भूमि व्यवस्था पर ही होती है। किसानों की ओर से सरकार पर आते संकट को टालने का फिलहाल यही उपाय हो सकता है कि वे अपनी समस्या साम्प्रदायिक झगड़ों में भूले रहें। यदि लीग और कांग्रेस आपस में नहीं लड़ेंगे तो अब सरकार के लिए इनमें से किसी एक को भी दबाना संभव नहीं रहा ह। जेकिन्स तो कैबिनेट मिशन को यह दिखा देना चाहता है कि हिन्दुस्तानियों को शासन का अधिकार सौंपना व्यावहारिक नहीं है। अगर यह योजना सफल हो जाए तो अंग्रेज गवनर की जरूरत ही नहीं रह जाएगी।

(ख) मौलादाद जी बोले 'अपनी-अपनी कार और अपने-अपने साज-सिंगार! फसलों की रंगत-रूप हत्थ की मेहनत से, अल्लाह तआला की बरकत से! यह तो ठीक है, महीन कप्पड़ और मुर्ग-पुलाव से खेती की वाही-त्राही नहीं होती।'

शाह जी ने बात उठा ली – 'मौलादाद जी, बडो सयानफ़ की बात की है आपने। मनुक्ख बच्चा बनकर धरती का आढ़न न पकड़े तो धरती माँ क्यों दूध पिलाने लगी! अपने वेद-शास्त्र भी यही कहते हैं कि धरती माँ को आदर-प्यार से सींचा-सराहा न जाए तो माँ के थनों की तरह धरती के सुंब भी पूरी तरह नहीं खुलते। जो सुंब न खुलें तो दूध की धाराएँ तो आप ही रुक गईं।'

ग) वे बडो गंभीरता से बोले कि, देखो ये कहानियाँ वास्तव में प्रेम नहीं वरन् उस ज़िन्दगी का चित्रण करती हैं जिसे आज का निम्न-मध्यवर्ग जी रहा है। उसमें प्रेम से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है आज का आर्थिक संघर्ष, नैतिक विशृंखलता, इसीलिए इतना अनाचार, निराशा, कटुता और अँधेरा मध्यवर्ग पर छा गया है। पर कोई-न-कोई ऐसी चीज़ है जिसने हमें हमेशा अँधेरा चीरकर आगे बढ़ने, समाज–व्यवस्था को बदलने और मानवता के सहज मूल्यों को पुनःस्थापित करने की ताकत और प्रेरणा दी है। चाहे उसे आत्मा कह लो चाहे कुछ और। और विश्वास, साहस, सत्य के प्रति निष्ठा उस प्रकाशवाही आत्मा को उसी तरह आगे ले चलते हैं जैसे सात घोड़े सूर्य को आगे बढ़ा ले चलते हैं। कहा भी गया है, 'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च'।

(घ) अगर तुम्हारी किस्मत ही फूटी हो और तुम्हें यहीं रहना पड़े तो अलग से अपनी एक हवाई दुनिया बना लो। उस दुनिया में रहा जिसमें बहुत-से बुद्धिजीवी आँख मूँदकर पड़े हैं। होटलों और क्लबों में। शराबखानों और कहवाघरों में, चण्डीगढ़-भोपाल-बंगलौर के नवनिर्मित भवनों में, पहाड़ी आरामगाहों में, जहाँ कभी न खत्म होने वाले सेमिनार चल रहे हैं। विदेशी मदद से बने हुए नये-नये शोध-संस्थानों में, जिनमें भारतीय प्रतिभा का निर्माण हो रहा है। चुरुट के धुएँ, चमकीली जैकेटवाली किताब और ग़लत, किन्तु अनिवार्य अंगजी की धुन्धवाले विश्वविद्यालयों में। वहीं कहीं जाकर जम जाओ, फिर वहीं जमे रहो।

2. यशपाल के उपन्यासों का परिचय देते हुए 'झूठा सच' की विशिष्टता का प्रतिपादन कीजिए। 10

3. 'जिन्दगीनामा' के भाषा-वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए। 10

4. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' मं चित्रित स्त्री-पुरुष संबंधों क विविध आयामों पर विचार कीजिए। 10

5. 'राग दरबारी' मं प्रयुक्त व्यंग्य के स्वरूप का विवेचन कीजिए। 10

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : $5 \times 4 = 20$

(क) धर्मवीर भारती के उपन्यास

(ख) रंगनाथ और रुप्पन

(ग) 'झूठा सच' में पुनर्वास का संघर्ष

(घ) 'जिंदगीनामा' की अंतर्वस्तु

एम. एच. डी.–16 : भारतीय उपन्यास
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–16
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–16/टी.एम.ए./2018–2019
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 15×4=60

1. 'चेम्मीन' उपन्यास की कथावस्तु का विवेचन कीजिए।

2. कन्नड़ साहित्य की परम्परा में यू. आर. अनंतमूर्ति के महत्व पर प्रकाश डालिए।

3. 'मानवीनी भवाई' के प्रमुख पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।

4. 'जंगल के दावेदार' में अभिव्यक्त आदिवासी जीवन की विवेचना कीजिए।

5. निम्नलिखित पर टिप्पणियाँ लिखिए : 10× 4=40
   (क) 'चेम्मीन' की भाषा शैली
   (ख) 'संस्कार' का सामाजिक परिवेश
   (ग) 'जंगल के दावेदार' उपन्यास में शाली का चरित्र
   (घ) पन्नालाल पटेल
   (ड.) 'चेम्मीन' में अभिव्यक्त मिथ